वार्तालाप नं. 360, हरीपुर भाग–1, ता.18.7.07
Disc.CD No.360, Haripur Part-1, dt. 18.07.07

समय – 15.00 से 16.50
बाबाः– कोई ने प्रश्न किया हैं। सतयुग में जब राधा कृष्ण जैसे बच्चे पैदा होते हैं तो उनके माँ–बाप बच्चों को जन्म देने के बाद शरीर छोड़ देंगे। जो बच्चे पैदा होते हैं तो वो छोटे बच्चे होंगे तो खायेंगे क्या?.....वहाँ ना बचपना होता है और ना बुढ़ापा होता हैं। बूढ़ा भी कोई नहीं होता हैं और वहाँ शैशवा अवस्था में पड़े–2 पालना भी नहीं लेनी पड़ती हैं। जैसे गाय का बच्चा जन्म लेता है और तुरंत उछलने लगता हैं, दौडने लगता हैं। वो तो आज कलियुग के जानवर की बात है। वहाँ तो सतयुग हैं और देवताओं की बात है। वहाँ कितनी सतोप्रधान प्रकृति होती हैं। वहाँ बच्चों को पालना लेने की दरकार नहीं पड़ती है। वो स्वतः ही अपने पैरें पर खड़े हो जाते हैं। ऐसे नहीं कि दो साल, चार साल उन्हें दूध पीने की जरूरत होगी। माँ की गोद में रहकर क ट्टी (tatti)–पेशाब सफाई कराने की जरूरत होगी। नहीं।

Time- 15.00 -16.50
Baba said: Someone has asked a question. In the Golden Age, when children like Radha and Krishna are born, then their parents will leave their bodies after giving birth to the children. The children who are born will be small children; so, what will they eat? .....There is neither childhood nor old age there. Nobody becomes old and there, one need not obtain sustenance while lying in a cradle in the childhood. For example a calf starts jumping and running as soon as it is born. That is in fact a matter of the animals in today's Iron Age. There it is the Golden Age and it is a matter of deities. The nature is so pure (*satopradhaan*) there. There the children need not receive sustenance. They stand on their feet automatically. It is not so that they will require drinking milk for two years, four years or that they will require getting their faeces and urine cleaned while living in the mother's lap. No.

समय – 16.51 से 17.40
जिज्ञासू :– बाबा, तो वहाँ बाप पैर धोकर बच्चों को तख्त पर बिठाते हैं।
बाबा :– पाव धोकर।
जिज्ञासू :– तो यहाँ.....?
बाबा :– संगमयुग में बुद्धि रूपी पाँव धोकर के तख्त पर बिठाते हैं। बुद्धि रूपी पाव में विकार भरे रहेंगे तो विश्व की बादशाही का तख्त लेने के काबिल बनेंगे क्या? बनेंगे? नहीं बनेंगे। यहाँ ह बेहद की बात और वहाँ हद की बात होती हैं।

Time- 16.51 – 17.40
Someone asked: Baba, so, the parents wash the feet of their children and make them sit on the throne.
Baba said: By washing the feet.
Someone asked: So, what about here.....?
Baba replied: In the Confluence Age, they wash their intellect like feet and make them sit on the throne. If the intellect like feet are immersed in vices, then will one become worthy of obtaining the emperorship of the world? Will one become? One will not become. Here it is a matter in unlimited sense and there it is a matter in limited sense.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय – 17.41 से 19.50
जिज्ञासू :– बाबा, शिव मंदिर में पार्वती क्यों रहती है? इसका कारण क्या है?
बाबा :– एक ही ऐसा देवता है जो सदैव प्रवृत्ति मार्ग का पक्का दिखाया गया है। प्रवृत्ति मार्ग का पक्का होगा तो शिव के साथ पार्वती होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए? होना चाहिए और–2 जो धर्मपिताएं ह वो प्रवृत्ति मार्ग के पक्के नहीं है। कोई कहे ब्रह्मा। तो ब्रह्मा तो सरस्वती उनकी बेटी है वो तो प्रवृत्ति मार्ग है ही नहीं। बाकी आगे आने वाले इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरूनानक ये सब निवृत्ति मार्ग के हैं। उनके व्दारा जो राजाईयां भी स्थापन हुई है उनके बाद में वो सब निवृत्ति मार्ग की राजाईयां स्थापन हुई है। एक बाप शिव ही है जो प्रवृत्ति मार्ग की राजाईयां स्थापन करता है इसलिए जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण आवेंगे। लक्ष्मी–नारायण बनने का लक्ष्य है तो लक्षण भी प्रवृत्ति मार्ग के धारण करने पड़े। पढ़ाई पढ़ाने वाला टीचर भी प्रवृत्ति मार्ग का होना चाहिए। इसलिए ऐसा कोई शिव का मंदिर नहीं होता है जहाँ कोई ना कोई रूप में पार्वती न हो।

Time- 17.41 – 19.50
Someone asked: Baba, why is Parvati present in a temple of Shiv? What is the reason for it?
Baba replied: There is only one deity who has been shown to be firm/steadfast (*pakka*) in the path of household. If he is firm in the path of household, then should there be Parvati along with Shiv or not? She should be present. Other religious fathers are not firm in the path of household. Someone may say Brahma. So, Saraswati is Brahma's daughter; that is not a path of household at all. As regards Abraham, Buddha, Christ, Guru Nanak, etc. who come later on, all of them belong to the path of renunciation. The kingships established by them, after them, all those kingships that have been established belong to the path of renunciation. It is Father Shiv alone, who establishes the kingships of the path of household. That is why as the aim, so shall be the characteristics that one imbibes. If one has the aim to become Lakshmi-Narayan, then one will also have to imbibe the characteristics of the path of household. The teacher who teaches the knowledge should also be in the path of household. That is why there is no such temple of Shiv, where Parvati is not visible in some or the other form.

समय – 19.50 से 21.30
जिज्ञासू :– बाबा कैसेट में बोला ह कि शिव बाबा कभी रोते नहीं है।
बाबा :– शिव बाबा को भी रोने की दरकार है ?
जिज्ञासू :– नहीं, बाबा मुरली में बोला है कि भगवान को जितना रूलाया है ता और कोई को नही।
बाबा :– शिव बाप। तो शिव किसे कहते हो और भगवान किसे कहते हो? भगवान शब्द के अर्थ होते हैं। भगवान का अर्थ क्या है? जैसे धनवान धनवान का अर्थ क्या है? धन वाला और भगवान का अर्थ क्या है? भाग्य वाला। तो जो शिव ज्योर्तिबिन्दू सुप्रीम सोल है उसको भाग्यवान कहेंगे? वो आकर के अपना भाग्य बनाता है क्या? भगवान आकर के तुम बच्चों को भगवान–भगवती बनाते हैं। जो बच्चे भगवान का टायटल धारण करते हैं उनके लिए बोला है कि भगवान को जितना रूलाया है उतना और किसी को नही रूलाया है।

Time- 19.50 – 21.30
Someone asked: Baba it has been said in a cassette that Shivbaba never cries.
Baba said: Does Shivbaba also need to cry?
Someone said: No, Baba, it has been said in Murli that nobody else has been made to cry as much *Bhagwaan* [God] has been made to cry.
Baba said: Father Shiv. So, whom do you call Shiv and whom do you call *Bhagwaan*? There are two meanings of *Bhagmadya/Bhagwaan*. What is the meaning of *Bhagwaan*? For example, *dhanwaan* (a prosperous person). What is the meaning of *dhanwaan*? One who possesses *dhan*, i.e. wealth. And what is the meaning of *Bhagwaan*? One who is fortunate

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

(*bhaagya vala*). So, will the point of light Shiv, the Supreme Soul be called fortunate? Does He come and make Himself fortunate? *Bhagwaan* comes and makes you children *Bhagwaan-Bhagwati*. It has been said for the children who assume the title of *Bhagwaan* that nobody else has been made to cry as much as *Bhagwaan* has been made to cry.

समय – 26.25 से 28.18
जिज्ञासू :– साकारी, आकारी और निराकारी जो तीन स्टेज है उनमें पाप और पुण्य कैसे आका जाएगा? कौनसी स्टेज में पाप और पुण्य होते हैं?
बाबा:– पाप शरीर से होते हैं या बिना शरीर के भी पाप होते हैं? शरीर पाँच तत्व का पुतला है। पाँच तत्व जब तमोप्रधान बनते हैं तो तमोप्रधान शरीर से पाप भी होते हैं। सतयुग, त्रेतायुग में भी शरीर होता था; परंतु वहाँ पाप नहीं होते थे। क्यों? क्योंकि पाँच तत्व का बना हुआ पुतला सतोप्रधान था। प्रकृति ही सतोप्रधान थी। भाव स्वभाव, संस्कार को भी प्रकृति कहते हैं। मानवीय भाव स्वभाव, संस्कार जब सात्विक होता है तब जड़ प्रकृति भी सात्विक होती है। पाप कर्म नहीं हो सकते हैं। जब मानवीय प्रकृति है, तामसी बनती है तब जड़ प्रकृति भी तामसी बन जाती है। फिर पाप कर्म होने लग पड़ते हैं। फिर साकार से पाप कर्म होंगे या निराकार और आकार से पाप कर्म होंगे? आकार से भी अगर होंगे तो भी कोई न कोई शरीर में प्रवेश करके ही पाप कर्म होंगे।

Time- 26.25 – 28.18
Someone asked: How can we calculate sins and noble actions among the *sakari* (corporeal), *aakaari* (subtle) and *niraakaari* (incorporeal) stages? In which stage are sins and noble actions performed?
Baba replied: Are sins committed through the body or are the sins committed even without the body? Body is an effigy (*putlaa*) of five elements. When the five elements become degraded, then sins are also committed through the degraded body. Even in the Golden Age and the Silver Age bodies existed, but sins were not committed there. Why? It is because the effigy made up of the five elements was pure. The nature itself was pure. Feelings, nature and resolves are also called nature. When the human feelings, nature, *sanskars* are pure, then the non-living nature is also pure. Sins cannot be committed. When the human nature becomes degraded, then the non-living nature also becomes degraded. Then sins begin to be committed. Then will sins be committed through the corporeal (body) or will sins be committed through the incorporeal and subtle? Even if sins are committed through the subtle (body), they will be committed only by entering some or the other body.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info